

ईरान, पाकस्तान और बलूच उग्रवाद

प्रलम्बिस के लयि:

[उत्तरी अटलान्टिक संधि संगठन \(NATO\)](#), [बांग्लादेश की मुक्तता](#), [तालबान](#), ईरान, पाकस्तान और बलूच उग्रवाद, सुन्नी उग्रवादी समूह, जैश अल-अदल, [आतंकवाद](#)

मेन्स के लयि:

ईरान, पाकस्तान और बलूच उग्रवाद, भारत से जुड़े या भारत के हतियों को प्रभावति करने वाले समझौते, द्वपिकषीय, कषेत्रीय तथा वैश्वकि समूह

[स्रोत: इंडयिन एक्सप्रेस](#)

चरचा में क्यो?

हाल ही में पाकस्तान के बलूचस्तान प्रांत में **ईरान-रोधी बलूच आतंकवादी समूह जैश अल-अदल (Jaish al-Adl- JAA)** के दो कथति ठकानों पर ईरानी मसिाइलों तथा ड्रोनों द्वारा हमला कयि जाने से **ईरान एवं पाकस्तान के संबंध प्रभावति हुए हैं**।

- पाकस्तान ने अपनी संप्रभुता के "घोर उल्लंघन" पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की तथा **ईरान में संदिग्ध आतंकवादी पनाहगाहों** पर सीमा पार मसिाइल हमले कयि।
- भारतीय [कुलभूषण जाधव](#) के अपहरण के बाद भारतीय सुरक्षा एजेंसियों ने **JAA की जाँच शुरू कर दी**। कथति तौर पर समूह द्वारा जाधव को पाकस्तान की इंटर सर्वसिज इंटेल्जिंस (ISI) को बेच दयिा गया था।



जैश अल-अदल कौन है?

- जैश अल-अदल अथवा न्याय की सेना, एक **सुन्नी आतंकवादी समूह है जो वर्ष 2012 में अस्तित्व में आया**। यह मुख्य रूप से ईरान-पाकस्तान सीमा के दोनों तरफ रहने वाले **जातीय बलूच समुदाय के सदस्यों** से बना है।
- इस समूह को **जुंदुल्लाह संगठन की एक शाखा** माना जाता है, जिसके कई सदस्यों को ईरान द्वारा गरिफ्तार किये जाने के बाद इसका प्रभाव कम हो गया था।
- जैश अल-अदल के मुख्य उद्देश्यों में **ईरान के पूर्वी ससितान प्रांत तथा पाकस्तान के दक्षिण-पश्चिमी बलूचस्तान प्रांत के लिये स्वतंत्रता** की मांग करना शामिल है। **बलूच लोगों के अधिकारों** का समर्थन करने वाले ये लक्ष्य, समूह को **ईरानी तथा पाकस्तानी दोनों सरकारों के लिये एक साझा लक्ष्य** बनाते हैं।
- जातीय बलूच समुदाय को ईरान तथा पाकस्तान दोनों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है, उनके संबंधित प्रांतों में संसाधनों एवं धन के उचित वितरण के अभाव से संबंधित चिंताएँ हैं। बलूच अलगाववादी एवं राष्ट्रवादी अधिक न्यायसंगत हस्तिसेदारी की मांग करते हैं व अमूमन अपनी शकियतों को व्यक्त करने के लिये विद्रोह का सहारा लेते हैं।
- बलूचस्तान में, विशेषकर सीमावर्ती क्षेत्रों में जैश अल-अदल की उपस्थिति, ईरान तथा पाकस्तान के बीच तनाव का एक स्रोत रही है।
 - दोनों देशों में आतंकवादी गतिविधियों के समर्थन में एक-दूसरे की संलिप्तता को लेकर संदेह और आरोप-प्रत्यारोप का इतिहास रहा है।

पाकस्तान और ईरान के बीच संबंध कैसे रहे हैं?

- **1979 पूर्व गठबंधन:**
 - ईरान में 1979 की इस्लामी क्रांति से पहले, दोनों देश **संयुक्त राज्य अमेरिका** के साथ मज़बूती से जुड़े हुए थे तथा वर्ष 1955 में **बगदाद पैक्ट/संधि** में शामिल हुए जसि बाद में **केंद्रीय संधिसंगठन (Central Treaty Organization- CENTO)** के रूप में जाना गया, जो **उत्तरी अटलांटिक संधिसंगठन (North Atlantic Treaty Organization- NATO)** पर आधारित एक सैन्य गठबंधन था।
 - ईरान ने वर्ष 1965 तथा वर्ष 1971 में भारत के **वरिद्ध युद्ध के दौरान पाकस्तान को सामग्री व हथियार सहायता प्रदान की**।
 - ईरान के शाह ने **बांग्लादेश की मुक्ति** के बाद पाकस्तान के "वधितन" पर चिंता व्यक्त की।
- **वर्ष 1979 के बाद की स्थिति:**
 - ईरान में इस्लामी क्रांति के कारण **अयातुल्ला खुमैनी** के नेतृत्व में **अति-रूढ़िवादी शिया शासन का उदय** हुआ। यह सैन्य तानाशाह **जनरल ज़ाया-उल-हक** के तहत पाकस्तान के स्वयं के इस्लामीकरण के साथ समवर्ती था।
 - दोनों देशों ने खुद को सांप्रदायिक विभाजन के विपरीत छोर पर पाया।
- **भू-राजनीतिक मतभेद:**
 - लगभग रातोंरात, ईरान, संयुक्त राज्य अमेरिका के सहयोगी से **घोषित प्रतद्विंद्वी** में बदल गया, जबकि अमेरिकियों ने पाकस्तान के साथ अपने संबंध कड़े कर दिये।
 - वर्ष 1979 से पाकस्तान के प्रति ईरान के **अवशिवास का एक प्रमुख कारण** रहा है, जो 09/11 के बाद और अधिक बढ़ गया क्योंकि इस्लामाबाद ने अमेरिका को "आतंकवाद के खिलाफ युद्ध" में समर्थन दिया।
 - ईरान की वर्ष 1979 के बाद की विदेश नीति, जो क्रांति के वस्तितार पर केंद्रित थी, ने अरब दुनिया में उसके पड़ोसियों को हतोत्साहित कर दिया।
 - इनमें से **प्रत्येक तेल-समृद्ध राज्य को परिवारों के एक छोटे समूह द्वारा प्रभावी ढंग से नियंत्रित** किया गया था, जो की क्रांति-पूर्व ईरान में शाह के शासन के विपरीत नहीं थी। इन अरब साम्राज्यों के साथ पाकस्तान के नरितर रणनीतिक संबंधों ने ईरान के साथ उसके संबंधों में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर दीं।
- **अफगानस्तान संघर्ष:**
 - सोवियत सेना की वापसी के बाद ईरान और पाकस्तान ने **अफगानस्तान में स्वयं को विपरीत** दिशा में पाया।
 - ईरान ने **तालिबान** के खिलाफ **उत्तरी गठबंधन का समर्थन** किया, यह समूह शुरु में पाकस्तान द्वारा समर्थित था।
 - वर्ष 1998 में **मज़ार-ए-शरीफ** में तालिबान द्वारा **फारसी भाषी शिया हजारा और ईरानी राजनयिकों की हत्या** के बाद तनाव बढ़ गया।
- **सुलह के प्रयास:**
 - ऐतिहासिक तनावों के बावजूद, दोनों देशों ने संबंधों में सुधार के प्रयास किये। प्रधानमंत्री बेनज़ीर भुट्टो **नवंबर 1995 में ईरान के खिलाफ अमेरिकी प्रतिबंधों को कड़ा करने** और साथ ही उनकी सरकार के दौरान पाकस्तान ने ईरान से **गैस आयात करने पर खेद व्यक्त** किया।
 - हालाँकि वर्ष 1999 में जनरल परवेज़ मुशर्रफ के सत्ता संभालने के बाद संबंधों में खटास आ गई थी।

ईरान और पाकस्तान के बीच बलूचस्तान की गतिशीलता क्या है?

- **भौगोलिक एवं जनसांख्यिकीय संदर्भ:**
 - ईरान-पाकस्तान सीमा जसि **गोल्डस्मिथ लाइन** के नाम से जाना जाता है, अफगानस्तान से उत्तरी **अरब सागर** तक लगभग 909 किलोमीटर तक फैली हुई है।
 - सीमा के दोनों ओर लगभग 9 मिलियन जातीय बलूच लोग रहते हैं, जो पाकस्तानी प्रांत बलूचस्तान, ईरानी प्रांत ससितान और बलूचस्तान तथा अफगानस्तान के पड़ोसी क्षेत्रों में रहते हैं।
- **साझा बलूच पहचान:**
 - बलूच लोग एक **सामूहिक सांस्कृतिक, जातीय, भाषाई एवं धार्मिक पहचान** साझा करते हैं जो इस क्षेत्र पर लगाई गई आधुनिक सीमाओं से परे है।
 - विभिन्न देशों में रहने के बावजूद **बलूच ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक संबंधों पर आधारित मज़बूत संबंध** बनाए रखते हैं।

■ हाशियाकरण एवं शकियतें:

- ईरान और पाकस्तान दोनों में बलूचों ने हाशिए पर जाने का अनुभव किया है तथा साथ ही प्रत्येक देश में प्रमुख शासनों से राजनीतिक एवं आर्थिक रूप से भी दूर महसूस कर रहे हैं।
 - पाकस्तान में, बलूच को पंजाबी-प्रभुत्व वाली राजनीतिक संरचना के भीतर एक जातीय अल्पसंख्यक के रूप में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
 - ईरान में वे न केवल एक जातीय अल्पसंख्यक हैं, बल्कि एक धार्मिक अल्पसंख्यक भी हैं, जिनमें से अधिकांश शिया प्रधान देश में सुन्नी हैं।

■ आर्थिक वषिमताएँ:

- बलूच मातृभूमि प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है, लेकिन आर्थिक वषिमताएँ बनी हुई हैं। ईरान में बलूच आबादी का एक बड़ा हिस्सा गरीबी रेखा के नीचे रहता है।
- पाकस्तान में, चीन की **बेल्ट एंड रोड पहल** जैसी परियोजनाओं में बड़े पैमाने पर निवेश के बावजूद, उनके जीवन में सुधार सीमित हैं।

■ राष्ट्रवादी आंदोलन:

- बलूच राष्ट्रवाद की ऐतिहासिक जड़ें 20वीं सदी की शुरुआत से ही व्याप्त हैं जब इस क्षेत्र में नई अंतरराष्ट्रीय सीमाएँ खींची गई थीं।
- ईरान और पाकस्तान दोनों में बलूच लोगों को हाशिए पर धकेलने से "ग्रेटर बलूचस्तान" राष्ट्र-राज्य की मांग करने वाले अलगाववादी आंदोलनों को बढ़ावा मिला है।

■ उग्रवाद तथा सीमा-पारगतिविधि:

- बलूच वदिरोही ईरान-पाकस्तान सीमा के दोनों ओर सैन्य और कभी-कभी नागरिक ठिकानों पर हमले करते हैं।
- बलूच लबिरेशन आरमी (BLA) तथा बलूच लबिरेशन फ्रंट (BLF) जैसे समूहों से संबद्ध वदिरोही, संबंधित राज्यों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में शामिल रहे हैं।

पाकस्तान और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के क्या नहितार्थ हैं?

■ क्षेत्रीय अस्थिरता:

- पाकस्तान और ईरान के बीच बढ़ता तनाव क्षेत्रीय अस्थिरता में योगदान दे सकता है, खासकर मध्य पूर्व तथा दक्षिण एशिया के जटिल भू-राजनीतिक परिदृश्य को देखते हुए।
- पाकस्तान तथा ईरान के बीच संबंधों में और तनाव आ सकता है, जिसका असर राजनयिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों पर पड़ सकता है।

■ प्रॉक्सी डायनेमिक्स:

- पाकस्तान और ईरान दोनों पर क्षेत्रीय संघर्षों में प्रतिनिधि रूप में वोट करने का समर्थन करने का आरोप लगाया गया है। तनाव छद्म गतिशीलता को बढ़ा सकता है, प्रत्येक देश दूसरे के आंतरिक मामलों में प्रभाव डालने की कोशिश कर रहा है या चल रहे क्षेत्रीय संघर्षों में कुछ गुटों का समर्थन कर रहा है।

■ बलूचस्तान पर प्रभाव:

- बलूचस्तान में अशांत बढ सकती है। बलूच राष्ट्रवादी आंदोलनों को गति मिल सकती है और स्थानीय आबादी पर इसका असर पड़ सकता है।
- यह स्थिति भारत, संयुक्त राज्य अमेरिका, सऊदी अरब या इजराइल जैसे अन्य क्षेत्रीय अभिकर्ताओं को आकर्षित कर सकती है, जिससे भू-राजनीतिक परिदृश्य और जटिल हो सकता है तथा संभावित रूप से व्यापक क्षेत्रीय संघर्ष हो सकता है।

■ सुरक्षा संबंधी चिंताएँ:

- बढ़ते तनाव से पड़ोसी देशों, विशेषकर अफगानिस्तान के लिये सुरक्षा चिंताएँ बढ़ सकती हैं। यह क्षेत्र पहले से ही सुरक्षा चुनौतियों से जूझ रहा है तथा बढ़ा हुआ तनाव स्थितिको और खराब कर सकता है।

■ भारत के लिये नहितार्थ:

- चाबहार बंदरगाह जैसी परियोजनाओं में भारत की भागीदारी को देखते हुए, तनाव का असर ईरान के साथ भारत के संबंधों पर पड़ सकता है। भारत, ईरान और संयुक्त राज्य अमेरिका दोनों के साथ अपने संबंधों को संतुलित करते हुए स्वयं को एक कमज़ोर राजनयिक स्थिति में पा सकता है।

पाकस्तान और ईरान के बीच टकराव पर भारत का रुख क्या है?

■ आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता:

- भारत ने "आतंकवाद के प्रति शून्य सहिष्णुता की अपनी अडगि स्थिति" पर बल दिया। यह बयान आतंकवाद के खिलाफ भारत के सतत रुख को रेखांकित करता है, जो पाकस्तान से उत्पन्न होने वाले सीमा पार आतंकवाद के संबंध में उसकी लंबे समय से चली आ रही चिंताओं के अनुरूप है।

■ आत्मरक्षा में कार्यों को समझना:

- भारत ने "देशों द्वारा अपनी आत्मरक्षा में की जाने वाली कार्रवाइयों" को स्वीकार किया और समझ व्यक्त की। यह क्षेत्र में जटिल सुरक्षा गतिशीलता की पहचान और देशों द्वारा उनकी सुरक्षा चिंताओं को दूर करने के लिये की जाने वाली कार्रवाइयों के प्रति सतर्क दृष्टिकोण का सुझाव देता है।

नष्िकर्ष

- पाकस्तान और ईरान के बीच बढ़ते तनाव के नहितार्थ बहुआयामी हैं तथा द्विपक्षीय संबंधों से परे हैं।

- यह स्थिति मध्य पूर्व और दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय स्थिरता, सुरक्षा गतिशीलता तथा व्यापक भू-राजनीतिक परिदृश्य को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।
- जोखिमों को कम करने, स्थितिको और अधिक बगिड़ने से रोकने के लिये राजनयिक प्रयास तथा तनाव कम करने के उपाय महत्त्वपूर्ण होंगे।
- भारतीयों को संयुक्त राष्ट्र जैसे अंतरराष्ट्रीय मंचों पर आतंकवाद का मुद्दा उठाना चाहिये और JAA जैसे आतंकवादी समूहों के समर्थन या व्यापार में पाकिस्तान की भागीदारी का सबूत पेश करना चाहिये, जिन्होंने कुलशभूषण जाधव का अपहरण किया तथा पाकिस्तान सरकार के साथ व्यापार किया।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष प्रश्न

??????:

प्रश्न. भारत द्वारा चाबहार बंदरगाह विकसित करने का क्या महत्त्व है?(2017)

- अफ्रीकी देशों से भारत के व्यापार में अपार वृद्धि होगी।
- तेल-उत्पादक अरब देशों से भारत के संबंध सुदृढ़ होंगे।
- अफगानिस्तान और मध्य एशिया में पहुँच के लिये भारत को पाकिस्तान पर निर्भर नहीं होना पड़ेगा।
- पाकिस्तान, इराक और भारत के बीच गैस पाइपलाइन का संस्थापन सुकर बनाएगा तथा उसकी सुरक्षा करेगा।

उत्तर: C

??????:

प्रश्न. इस समय जारी अमेरिकी-ईरान नाभकीय समझौता विवाद भारत के राष्ट्रीय हितों को किस प्रकार प्रभावित करेगा? भारत को इस स्थिति के प्रतिक्रिया रवैया अपनाना चाहिये? (2018)

प्रश्न. भारत की ऊर्जा सुरक्षा का प्रश्न भारत की आर्थिक प्रगतिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भाग है। पश्चिमी एशियाई देशों के साथ भारत की ऊर्जा नीतिसहयोग का विश्लेषण कीजिये। (2017)